अध्याय - 6

समापन

अध्याय - 6

समापन

मानव चिंतनशील प्राणी हैं। सौंदर्य पिपासा उसकी सहज प्रवृत्ति है। नवीनता की ओर आकृष्ठ होना उसका स्वाभाविक गुण है। अपनी इन विशेषताओं को लेकर वह विभिन्न क्षेत्रों में विविध प्रयोग करता रहता है। क्या साहित्य, क्या विज्ञान, क्या तकनीकी, क्या कला, क्या क्रिडा आदि में प्रयोग करते रहना मानव की सहज प्रवृत्ति है। साहित्यकार मानव समाज का सदस्य होने के कारण वह भी इसका अपवाद नहीं। आजकल साहित्य की विभिन्न विधाओं में विविध प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढती जा रही हैं। नाट्क साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है और रंगमंच के कारण उसकी विशिष्टता उल्लेखनीय हैं। अतः नाट्य साहित्य में भी नाटककारों ने विविध प्रयोग किये हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य-साहित्य, कथ्य, शिल्प, शैली तथा रंगमंचीयता की दृष्टि से समृध्द है। जगदीशचंद्र माथुर का कोणार्क अपनी प्रयोगशीलता के कारण हिन्दी का एक नया नाटक है। मोहन राकेश ने भी अपनी नाटकों में अभिनव प्रयोग किये है। "आषाढ का एक दिन" और "लहरों के राजहंस" में मिथकीय प्रयोग उल्लेखनीय हैं। रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से मोहन राकेश का "आधे-अधूरे" विशेष ख्याति प्राप्त है। लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने नाटकों में अनेक प्रयोग किये हैं। प्रतीकात्मकता, मिथकीयता, लोकनाट्यता के प्रयोग उनके नाटकों की विशिष्टता हैं। नाटक "तोता-मैना", "रक्तकमल", "रातरानी", "अन्दूली दीवाना", "कलंकी", "सत्य हरिश्चंद्र", "सब रंग मोह भंग" आदि उल्लेखनीय प्रयोगधर्मी नाटक हैं। सर्वेश्वर दयाल का "बकरी" नाटक सुरेन्द्र वर्मा के "द्रौपदी" सुर्य की अन्तिम किरण से सुर्य पहली किरण तक", "छोटे सैय्यद, बडे सैय्यद"

"शकुंतला की अंगूठी" उत्कृष्ट प्रयोगशील नाटक है। मणि मधूकर के नाटकों में "रसगंधर्व", "बुल बुल सराय", "बोलो बोधिवृक्ष" तथा मुद्राराक्षस के "तिलचट्टा", "तेंदुआ", रमेश बख्शी के वामाचार, तीसरा हाथी, आदि नाटकों ने हिन्दी की प्रयोगधर्मी नाट्य परम्पराको विकसित किया है। साठोत्तर नाटककारों में भीष्म साहनीने में भी अपनी नाटकों में विविध प्रयोग करके प्रयोगशील नाट्य परम्परा को गौरवान्कित किया हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में विविध प्रयोग करनेवाले नाटककारों में और एक नाम है - भीष्म साहनी।

प्रयोगधर्मीता की दृष्टि से भीष्म साहनी के नाटकों की एक विशेषता उनके नाटकों में प्रयुक्त मिथकीय प्रयोग हैं। मिथक आदिम मानव की सृष्टि है। मिथक लोक विश्वास के परिचायक होते है। मिथक और साहित्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। विश्व के महान साहित्य में मिथकों की नियोजना दिखायी पडती है। साहित्य में मिथकीय प्रयोग मिथक को नया अर्थ प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में "हानूश", "कबिरा खडा बजार में", और "माधवी" में प्राचीन मिथकों को नये जीवन सन्दर्भ में देखने की कोशिश की गयी है। भीष्म साहनी के प्रथम तीन नाटकों -"हानूश", "कबिरा खडा बजार में" और "माधवी" में मिथकों का यथोचित प्रयोग दिखायी पडता है। "हानूश" नाटक का मूल आधार मध्ययुगीन संस्कृति है। नाटककार भीष्म साहनी ने घडी बनानेवाले मध्ययुगीन कलाकार को आधुनिक जीवन संदर्भ में चित्रीत किया गया है और दर्शाया है कि श्रेष्ठ कलाकार किसी एक देश या कौम की सन्तान होनेपर भी वह कलाकार सार्वजनिन बन जाता है। भीष्म साहनी का हानूश एक ऐसा कलाकार है कि जो घडी बनाने में निपुण है। नाटककार भीष्म साहनी ने मध्ययुगीन हानूश को कलाकार के रूप में रेखांकित कर आधुनिक कलाकार की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। हानूश की सृजनशीलता में नाटककार की अपनी सृजनशीलता का परिचय मिलता है। आधुनिक कलाकार की त्रासदी का यह एक ऐसा चित्र है जो अनेक युगों तक कलाकार

के सर्जनशीलता का मेरूदंड है। "कबिरा खडा बजार में" कबीर के मिथक को आधुनिक भावभूमिपर प्रस्तुत करने में नाटककार कामयाब हुआ है कबीर के दार्शनिक विचारों की अपेक्षा कबीरकालीन सामाजिक और राजनीतिक स्थिति और कबीर की समाजसुधारक दृष्टि को अंकित करने में नाटककार भीष्म साहनी कामयाब हुये हैं। गुरूदक्षिणा के प्रसंग को लेकर गालव और माधवी के प्रणय बन्ध को और पुरूषदारा नारी के शोषण को रेखांकित करनेवाले नाटककार ने आज की युगीन स्थिती का परिचय दिया है। पुरूषप्रधान संस्कृति मे नारी की अवहेलना, प्रतारणा दिखाने में नाटककार सफल हुआ है।

इन तीनों नाटकों मे नाटककार भीष्म साहनी ने पुरातन मिथकों को सुरक्षित रखकर पुरातन मिथकों के आधुनिक जीवन संदर्भ में नयी व्याख्या प्रस्तुत की है और इसप्रकार भीष्म साहनी के विवेच्य नाटकों में प्रयुक्त मिथकीय प्रयोग विशेष उल्लेखनीय बन पडा है। इतना ही नही नाटककार भीष्म साहनी ने अपने नाटकों में मिथकों का प्रयोग करते समय विवेच्य पात्रों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण और आधुनिक मानवीय जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया हैं। हानूश का सृजनशीलता का रूप, कबीर का समाज सुधारक का आधुनिक रूप ओर माधवी का पुरूष वर्ग दारा शोषिक रूप, पुरातन मिथकों की सार्थकता और नयी अर्थवत्ता का उच्चांक है। जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश, डॉ·रामकुमार वर्मा, डॉ·लक्ष्मीनारायण लाल, डॉ·शंकर शेष आदि स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों ने अपने नाटकों मे जो मिथकीय प्रयोग किये हैं, उनमें भीष्म साहनी का नाम भी रोशन हुआ है।

आधुनिक हिन्दी नाटकों में लोक नाट्य शैली का विशेष महत्त्व है। साठोत्तर हिन्दी नाटककारों ने लोक नाट्य शैली के विविध प्रयोग अपने नाटकों में किये है, जो सराहनीय है। भीष्म साहनी ने भी "कबिरा खडा बजार में", "माधवी" तथा "मुआवज़े" नाटकों में लोकनाट्य शैली के विविध प्रयोग किये हैं। भीष्म साहनी के तीनों विवेच्य नाटकों में भारतीय लोक जीवन का और लोकसंस्कृति का यथार्थ चित्रण दिखायी पडता है। नाटककार दारा लोक जीवन का जो चित्रण

प्रस्तुत किया गया है वह इसलिये उल्लेखनीय है कि, उसमें भारतीय जनजीवन का वास्तव चित्रण नजर आता है। "कबिरा खडा बजार में" में नाटककार ने तत्कालिन साधारण जनजीवन, धार्मिक सम्प्रदाय, धर्म मार्तण्डों का लोकनाट्य शैली के अंतर्गत लोकगीतों का जो प्रयोग किया गया है, बडा सार्थक है। "कबिरा खडा बजार में" कबीर के दोहे, कबीर के पद और कबीर की साखियों का जनभाषा में प्रयुक्त प्रयोग प्रयोगधर्मिता का उत्कृष्ठ उदाहरण है। मुआवज़ें में लघु लोक गीतों का प्रासंगिक प्रयोग अनूठा है। "माधवी" नाटक में कथावाचक का प्रयोग भारत की नवी और सूत्रधार के प्राचीन प्रयोग का आधुनिक रूपांतरण हैं। "माधवी" नाटक के वस्तु-विकास में कथावाचक का प्रयोग एक सार्थक प्रयोग है।

वर्तमान नाटककार नाट्य शिल्प के प्रति विशेष रूप से सजग रहे हैं और उन्होंने अपनी नाटकों में विविध प्रयोग किये हैं। भीष्म साहनी के विवेच्य नाटकों में शिल्पगत नये प्रयोगों की विशिष्टता दिखायी देती है। इस दृष्टि से नाटककार को "प्रयोगधर्मी नाटककार" कहने में कोई आपत्ती नहीं हो सकती। 1977 में प्रकाशित "प्रजा ही रहने दो", "सब रंग मोह भंग", "सगुन पंछी", "वामाचार" और "हानूश" जैसे सफल प्रयोगशील और सुगठित नाट्य प्रयोगो में से निश्चय ही यह वर्ष समृध्द हुआ यह माना जा सकता है। यद्यपि नाटककार मार्क्सवाद के अध्येता और प्रगतिवाद के विचारक है। फिर भी नाटककार ने इसका अंन्धानुकरण अपने नाटकों में नहीं किया है। किन्तु वस्तु विन्यस्त प्रयोगों में भारतीय वर्तमान जीवन संदर्भो को उजागर किया है। पात्रों की संख्या के बारे में विविधता नजर आती है। "कबिरा खडा बजार में" और "मुआवजें- इन दोन नाटकों में पात्रों की संख्या ज्यादा हैं लेकिन इन नाटकों में एक कलाकार दो या तीन पात्रों की भूमिका भी अदा कर सकता है। पात्रों के नामकरण का प्रयोग भी अभिनव है। मनोवैज्ञानिक धरातलपर "हानूश" और "माधवी" का खण्डित व्यक्तित्त्व नाट्य शिल्पगत प्रयोग की विशिष्टता हैं। भीष्म साहनी के संवाद रचना और भाषा शैली नाटयानुकूल तथा पात्रानुकूल है। संवाद में संवाद, सांकेतिक संवाद, सुचनात्मक संवाद प्रयोग की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। कहावतें ओर मुहावरों से युक्त भाषा

नाट्य शिल्प की अपनी विशेषता है। लोक गीतों का अनुठा प्रयोग नाट्यशिल्प की विशेष उल्लेखनीय प्रयोगधर्मिता हैं।

रंगमंच नाटक का प्राणतत्त्व है। इस दृष्टि से नाटककार भीष्म साहनी ने अपने चारों नाटकों में विविध प्रयोग किये है। भीष्म साहनी के नाटकों का दृश्यविधान उल्लेखनीय है। नाटककार स्वयं अभिनेता और रंगमंच से जुडा हुआ होने के कारण उनके नाटकों में प्रयुक्त दृश्यविधान मौलिक है। जहाँ नाटककारने अपने प्रथम तीन नाटकों में अंकों के अंतर्गत दृश्य विधान का प्रयोग किया है, वहाँ अपने अंतिम नाटक "मुआवजे" में अंकों को स्थान न देकर केवल दृश्यों की ही नियोजना की है। "मुआवजे" नाटक में कुल बारह दृश्य हैं। यह अलग-अलग होकर भी एक दूसरे से सम्बध्दद है, पूरक हैं। दृश्य योजना, प्रासंगिक और कथ्य से सम्बन्धित है। "हानूश", "कबिरा खडा बजार में", "माधवी" में ऐतिहासिक दृश्यों की नियोजना जरूर की गयी है लेकिन आधुनिक जीवन सन्दर्भ को नही भूला गया है। नाटककार भीष्म साहनी स्वयं अभिनेता होने के कारण उन्होंने नाटकों की पात्र सृष्टि में अभिनय की ओर पूरा ध्यान दिया है। विशेषतः हानूश और उसकी पत्नी कात्या , कबीर और लोई, गालव और माधवी आदि पात्र अभिनेयता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। "मुआवजे" नाटक में बारह दृश्यों के अंतर्गत अनेक पात्रों की भरमार हुयी हैं फिर भी कमिशनर, जग्गा, सुथरा आदि पात्र अपनी अपनी जगह अच्छे बन पडे हैं। पात्रों की क्रियाव्यापारों में अभिनय के चारों प्रकार समन्वित रूप में उजागर हुये हैं। नाटकों में प्रयुक्त ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों की वेशभूषा तद्नुरुप हैं और अन्य पात्रों की वेशभूषा सम-सामायिक हैं, पात्रानुकूल हैं। नाटकों में प्रकाश और ध्वनियोजना का सांकेतिक प्रयोग बडा ही आधुनिक अनुठा है। दृश्य परिवर्तन के लिए प्रकाश और अंधकार का प्रयोग प्रासंगिक तथा सांकेतिक है। ध्वनियोजना का सार्थक प्रयोग उनके नाटकों की विशिष्ठ उपलब्धि हैं। नाटककारने अपने रंगसंकेतों में औचित्य को महत्त्व दिया है और संयमित सूचनाएँ निर्देशीत किये है। दर्शकों, पाठकों ओर निर्देशकों ने उनके नाटकों की सराहना की है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भीष्म साहनी के चारों नाटकों में प्रयोगधर्मिता के जो विविध रूप नजर आते हैं वे हिन्दी स्वातंत्र्योत्तर प्रयोगधर्मिता को उजागर करनेवाले और नाटककार का नाम रोशन करनेवाले हैं। हिन्दी की प्रयोगधर्मी नाट्य परम्परा में भीष्म साहनी का नाम उनकी असाधरण प्रतिभा का उनके भोगे हुये यथार्थ का मणिकांचन योग हैं।